55

यरूशलेम पर उसकी सात हाय व उसका विलाप

(23:13-39)

मन्दिर में अपने सार्वजनिक सम्बोधन के दौरान यहां यीशु ने उन यहूदी अगुओं पर जो उसे नकार रहे थे और लोगों को गलत दिशा में ले जा रहे थे, एक के बाद एक ''हाय'' कही। ''हाय'' के लिए यूनानी शब्द (*ouai*) नबियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले इब्रानी शब्द *hoy* के समान है (यशायाह 5:8-23; हबक्कूक 2:6-19)। इसमें किसी के अपने जीवन को खोने का दुख, पीड़ा, क्रोध, शोक, खेद या भय का सुझाव हो सकता है। जॉन मैकार्थर, जूनि., ने लिखा है कि यह ''ध्वनियों के अनुकरण से शब्दों के आवेगसूचक गठन के सामान्य अर्थ में इतना अधिक शब्द नहीं'' है।[1] अन्य शब्दों में यह नाटकीय, अर्थपूर्ण स्वर बनाता है। यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान और ''हाय'' कहीं (11:21; 18:7; 24:19; 26:24)। ''हाय'' शब्द ''धन्य'' शब्द के उलट है (लूका 6:17-26)।

इस अवसर पर यीशु द्वारा घोषित हायों की संख्या पर विवाद है। KJV में आठ हाय मिलती हैं। NASB में भी आठ हाय हैं, चाहे आयत 14 वाली हाय को कोष्ठकों में रखा गया है। NIV में सात हाय हैं, क्योंकि आयत 14 को टिप्पणी बना दिया गया है। इस प्रकार इस आयत के साथ अधिक हाल ही में हुए अनुवादों के व्यवहार का कारण यह है कि आरम्भिक हस्तलिपियों में यह नहीं मिलता है। इसके अलावा वे गवाह जिसमें यह आयत भी है, इसे या तो आयत 13 से पहले या बाद में रखते हैं। इसलिए धर्मशास्त्र के हाल के अलोचक तर्क देते हैं कि यह आयत मरकुस 12:40 या लूका 20:47, में समानांतर से ली गई थी, जहां यह बात निर्विवाद है।[2]

धर्मशास्त्र का प्रमाण मत्ती के इस भाग की केवल सात हायों का पक्ष लेता हुआ लगता है, जो एक पूर्ण अंक को दर्शाता है (देखें प्रकाशिवाक्य 5:1; 8:2; 10:3; 15:1; 16:1)। आयत 14 को शामिल करना वास्तव में आयत 13 और 15 में अन्य लोगों के फरीसियों के प्रभाव की चर्चा में रुकावट डालता है। चाहे हायों की संख्या में शामिल नहीं है पर यहां पर आयत 14 पर अन्य सात हायों के साथ चर्चा की गई है।

पहली हाय
(23:13, 14)

[13]''हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो आप ही उसमें प्रवेश करते हो और न उसमें प्रवेश करने वालों को प्रवेश करने देते हो। [14][हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम

विधवाओं के घरों को खा जाते हो, और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हो: इसलिए तुम्हें अधिक दण्ड मिलेगा।]''

आयत 13. अधिकतर हायों में से पहली हाय में यीशु ने **शास्त्रियों और फरीसियों को कपटी** कहते हुए उनकी आलोचना की (23:15, 23, 25, 27, 29)। यूनानी शब्द (*hupokritēs*) का लिप्यंतरण ''कपटी'' शब्द के लिए अंग्रेज़ी का ''hypocrite'' शब्द ''कलाकार'' के लिए मंच में इस्तेमाल होता था। अन्त में इसका अर्थ कोई भूमिका निभाने के लिए जो उसके अपने व्यक्तित्व से उलट हो, मुखौटा पहनने वाले के लिए बन गया (6:2, 5 पर टिप्पणियां देखें)। यीशु को मालूम था कि यह धार्मिक अगुवे उससे अधिक धर्मी होने का दिखावा कर रहे थे जो वे वास्तव में थे।

प्रभु ने कहा कि यहूदी अगुवे **मनुष्यों के लिए परमेश्वर के राज्य का द्वार बन्द करते हैं।** अनुवाद हुए ''बन्द करते'' के यूनानी शब्द (*kleiō*) का अर्थ ''बन्द करना,'' ''ताला लगाना,'' या ''बाधा डालना'' है। इसका सम्बन्ध ''कुंजी'' के लिए शब्द (*kleis*) से है। यह बाद वाला शब्द यीशु की प्रतिज्ञा में मिलता है, जिसने पतरस को ''स्वर्ग के राज्य की कुंजियां'' देनी थीं (16:19)। इसलिए यहूदी अगुओं और उसके प्रेरितों में अन्तर किया जा सकता है। शास्त्री और फरीसी लोगों को राज्य से बाहर निकालकर दरवाजा बन्द कर रहे थे पर पतरस और अन्य प्रेरितों ने राज्य के द्वार खोलकर लोगों को अन्दर आने देना था (16:19 पर टिप्पणियां देखें)। कुंजियां मसीह के सुसमाचार को कहा गया है। इससे मिलती एक आयत में यीशु ने कुछ ''व्यवस्थापकों'' (शास्त्रियों) को ''ज्ञान की कुंजी'' लेने के लिए डांट लगाई (लूका 11:52)। अपनी मानवीय परम्पराओं और कपटपूर्ण नमूनों के साथ-साथ मसीह को उनके ठुकराने के कारण सच्चे मन से ढूंढ़ने वालों को सच्चाई की खोज करने से रोक दिया गया था।

यीशु ने यह कहते हुए अपनी बात स्पष्ट की, ''**न तो आप ही उसमें प्रवेश करते हो और न उसमें प्रवेश करने वालों को प्रवेश करने देते हो।**'' यह एक त्रासदी ही थी कि अधिकतर शास्त्रियों और फरीसियों ने मसीह और उसके राज्य को ठुकरा दिया था। परन्तु इससे भी बुरा यह था कि वे लोगों को यीशु के विरुद्ध भड़का रहे थे। यूहन्ना में कई आयतों से पता चलता है कि कई यहूदी यीशु में विश्वास लाए, परन्तु वे उसमें अपने विश्वास को व्यक्त करने से डरते थे, क्योंकि उनके अगुओं ने उन्हें आराधनालय से बाहर निकाल देना था या अन्य प्रकार से प्रताड़ित करना था (यूहन्ना 7:12, 13; 9:22; 12:42; 19:38)।

आयत 14. जैसा पहले कहा गया था कुछ हस्तलिपियों में एक अतिरिक्त हाय है, जिसे शायद मरकुस 12:40 या लूका 20:47 से लिया गया: **हाय है तुम पर ... क्योंकि तुम विधवाओं के घर खा जाते हो, और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हो।** हो सकता है कि यहूदी अगुवे जानबूझकर विधवाओं से उनकी सम्पत्ति छीन लेते हों। शायद वे जिन्हें मृत पतियों द्वारा उन सम्पत्तियों का संरक्षक ठहराया गया था और वे इस अधिकार का इस्तेमाल अधिक लाभ के लिए कर रहे थे।[3] एक और सम्भावना है कि यह यहूदी अगुवे ऐसी विधवाओं के आतिथ्य का शोषण कर रहे थे,[4] जिसका साथी अभी-अभी खोया हो, विशेषकर वह आसानी से धोखे में फंस सकती थी। यह खेद की बात है कि लोग दुखी विधवा का अनुचित लाभ उठाएं,

पर ऐसे व्यक्ति धार्मिक अगुआ होने पर यह और भी निंदनीय हैं।

इन कपटियों को "बहुत देर तक प्रार्थना करने वाले" माना जाता था। यीशु ने प्रमुख स्थानों पर खड़े होकर लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएं करने और बक-बक भरी प्रार्थना करने की उनकी आदत पर ध्यान दिलाया था (6:5-7 पर टिप्पणियां देखें)। इन लोगों की भक्ति का दिखावा समाज के सबसे कमज़ोर सदस्यों की चीज़ें चुराने से सामने आ गया था।

इस आयत की अन्तिम बात, **इसलिए तुम्हें अधिक दण्ड मिलेगा**, फिर से नरक में मिलने वाले दण्ड के दरजों का सवाल मन में लाता है। कई आयतें इस विचार का समर्थन करती हुई मिलती हैं (11:23, 24; लूका 12:47, 48; 2 तीमुथियुस 4:14; इब्रानियों 2:2, 3; 10:29; याकूब 3:1)। परमेश्वर हर व्यक्ति के कामों के आधार पर दण्ड देगा (रोमियों 2:5, 6; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8)। पवित्र शास्त्र का निष्कर्ष यह प्रतीत होता है कि जो अधिक दण्ड के योग्य है उन्हें, अधिक दण्ड मिलेगा, जबकि जो कम दण्ड के योग्य हैं उन्हें कम मिलेगा।

दूसरी हाय (23:15)

15 "हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में
लाने के लिए सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है तो उसे
अपने से दूना नारकीय बना देते हो।"

आयत 15. पहली हाय यहूदी अगुओं को दूसरों को राज्य से रोकने के लिए दोषी ठहराती थी (23:13)। इससे मेल खाती दूसरी **हाय** उनके लिए कही गई, जो अपने कपट में दूसरों को परिवर्तित करते हैं।

मत में आ जाता (*prosēlutos*) शब्द आमतौर पर यहूदी मत में परिवर्तित होने वाले अन्यजाति के लिए कहा जाता है। "मत में आने के निकट" वास्तव में यहूदी नहीं, बनते थे परन्तु वे परमेश्वर का भय मानने वाले लोग थे, जो यहूदी मत के प्रति सहानुभूति रखते थे (प्रेरितों 10:2, 22, 35; 13:16, 26, 50; 16:14; 17:4, 17; 18:7)।[5] "धार्मिकता में आने वाले" खतना किए हुए और सचमुच में यहूदी बने लोग होते थे (प्रेरितों 2:10; 6:5; 13:43)। तौभी यहां पर "मत में आ जाता" शब्द उस व्यक्ति के लिए है, जो फरीसियों के गुट में परिवर्तित हो जाता था।

फरीसी किसी को परिवर्तित करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा देते थे। **जल और थल में फिरना** वाक्यांश लोकोक्ति के रूप में हो सकता है, जिसका अर्थ "पूरा ज़ोर लगाना" है। यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी अन्यजातियों के लिए यहूदी मत को आकर्षित करने की कोशिश करते थे। अपने काम में उन्हें चाहे थोड़ी सफलता मिलती थी,[6] पर फरीसियों को कुछ प्राप्त नहीं होता था।

यीशु ने कहा कि किसी को अपने मत में ले आने के बाद वे उसे **अपने से दूना नारकीय बना देते**। "नारकीय" एक सामी अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ है कि कोई केवल नरक के योग्य है।[7] उन्मादपूर्ण जोश में यह परिवर्तित अपने मार्गदर्शकों से भी बढ़कर थे; परन्तु उनका जोश झूठ

और कपट पर आधारित था। इस कारण वे दोहरी सजा के योग्य थे।

तीसरी हाय (23:16-22)

16"हे अंधे अगुवो, तुम पर हाय! जो कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की सौगन्ध खाए तो उस से बन्ध जाएगा। 17हे मूर्खो, और अन्धो, कौन बड़ा है, सोना या वह मन्दिर, जिस से सोना पवित्र होता है? 18फिर कहते हो कि यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, यदि कोई उस की शपथ खाए तो बंध जाएगा। 19हे अन्धो, कौन बड़ा है भेंट या वेदी: जिस से भेंट पवित्र होती है? 20इसलिए जो वेदी की शपथ खाता है वह उस की, और जो कुछ उस पर है, उस की भी शपथ खाता है। 21जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह उस की और उस में रहने वाले की भी शपथ खाता है। 22जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठने वाले की भी शपथ खाता है।"

आयत 16. तीसरी **हाय** का आरम्भ दूसरी हायों से अलग तरह से होता है। अगुओं को "कपटी, शास्त्री और फरीसी" कहने के बजाय यीशु ने उन्हें **हे अंधे अगुओ** कहा। पहले यीशु ने फरीसियों के लिए कहा था, "उनको जाने दो; वे अंधे मार्गदर्शक हैं और अंधा यदि अंधे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड्ढे में गिर पड़ेंगे" (15:14)। फरीसी लोग सच्ची आत्मिक ज्योति और ज्ञान देने वाले होने पर अपने आप पर घमण्ड करते थे पर आत्मिक रूप में वे स्वयं अंधे थे, उन्हें सत्य का ज्ञान नहीं था! यदि वे स्वयं सत्य के पास न आते तो न्याय के दिन उन्हें और उनके पीछे चलने वालों को बड़ी हानि होनी थी और उन्हें नरक में डाल दिया जाना था।

23:16–22 में यीशु ने शपथ के उदाहरण का इस्तेमाल करते हुए फरीसियों के आत्मिक अंधेपन को सामने लाया (5:34–37 पर टिप्पणियां देखें)। उसने उन पर माननीय सौगन्ध की बात पर उनके गलत तर्क के लिए दोषी ठहराया। यह मान लेना कि जो मन्दिर, वेदी, या स्वर्ग की शपथ खाता है उसने जीवते परमेश्वर की शपथ नहीं खाई, मूर्खता थी। परमेश्वर को शब्दों के खेल से मात नहीं दी जा सकती। इस हाय में शपथ खाने की मंजूरी नहीं है पर यह उसके विरोधियों के अंधेपन के लक्षण को दिखाती है।[8]

फरीसी अपने चेलों को बताते थे, "**यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की सौगन्ध खाए तो उससे बन्ध जाएगा।**" "मन्दिर" (*naos*) जो मन्दिर का भीतरी भाग था, परमेश्वर की उपस्थिति को दिखाता था। यह वह स्थान था, जिसमें उसने अपने नाम को रखा था (देखें 2 इतिहास 5:11–14; 6:18–21)। तौभी फरीसी मन्दिर के सोने पर आधारित शपथ को मन्दिर पर आधारित शपथ से बढ़कर मानते थे। ऐसा सोना वे पत्तरे हो सकते थे, जिनसे भीतरी वेदी की बाहरी दीवारों को सजाया गया था। जोसेफस ने लिखा है:

> अब मन्दिर का सामने वाला बाहरी भाग ... सारे का सारा भारी वजन वाले सोने के पत्तरों [से] ढका हुआ था, और सूर्य की पहली किरणों के साथ, इनकी बड़ी ज़बर्दस्त चमक पड़ती थी, और इस पर दृष्टि डालने की कोशिश करने वालों को आंखें वैसे ही

फेरनी पड़ती थीं, जैसे सूर्य की किरणों से फेरते हैं।[9]

एक और सम्भावना है कि सोना मन्दिर को अर्पित चंदे के लिए है।[10]

आयत 17. यीशु ने फरीसियों को **हे मूर्खो** कहा। पहले उसने क्रोध के अर्थ में "मूर्ख" (*mōros*) शब्द के इस्तेमाल के विरुद्ध चेतावनी दी (5:22)। ऐलन हयू मेक्नेल को लगा कि यह दिखाता है कि इस शब्द से कुछ फर्क नहीं पड़ता परन्तु जिस सोच से कहा गया हो उससे पड़ता है।[11] उनके तर्क के बेतुके होने को सामने लाते हुए यीशु ने पूछा, "**कौन बड़ा है, सोना या वह मन्दिर जिस से सोना पवित्र होता है?**" स्पष्टतया मन्दिर सोने से बड़ा था। मन्दिर के कारण ही सोना पवित्र था न कि सोने के कारण मन्दिर पवित्र था।

आयत 18. इन फरीसियों का यही कहना था कि यदि कोई **वेदी की शपथ खाए** तो इसका अर्थ **कुछ नहीं** है। परन्तु यदि वह **उस भेंट की जो उस पर है** शपथ खाए तो वह उससे **बंध जाएगा**। यहां वेदी मन्दिर के प्रवेश द्वार के सामने बनी होमबलि की वेदी थी। इस वेदी पर याजक प्रतिदिन जानवरों के बलिदान भेंट करते थे। अन्य भेंटों में अनाज और दाखरस होता था। "भेंट" के लिए यूनानी शब्द (*dōron*) का अनुवाद "दान" भी हो सकता है (NIV)।

आयत 19. एक बार फिर फरीसियों के तर्क में कमी थी। यीशु ने पूछा, "**कौन बड़ा है भेंट या वेदी: जिस से भेंट पवित्र होती है?**" निर्गमन 29:37 कहता है कि "जो कुछ वेदी से छू जाएगा वह भी पवित्र हो जाएगा।" स्पष्टतया वेदी से भेंटें पवित्र होती थीं, इस कारण यह बड़ी थी।

आयतें 20-22. प्रभु ने कहा कि **वेदी की शपथ** खाना **जो कुछ उस पर उसकी शपथ** खाने की तरह ही था। फरीसियों के नियमों में कपटियों के लिए शपथ खाकर अपनी मनन्त पूरी करने के दायित्व को न मानने का तरीका दिया गया था-उनके लिए झूठ बोलने का आसान तरीका था। यीशु केवल यही नहीं कह रहा था कि फरीसियों ने मामले को बिल्कुल पलट दिया था बल्कि वह अपने सुनने वालों को यह भी बता रहा था कि हर शपथ माननीय है।[12]

यीशु ने संकेत दिया कि लोग जब भी **मन्दिर की** शपथ खाते थे वे परमेश्वर की भी शपथ खा रहे होते थे जो **उसमें** रहता था। विशेषकर मन्दिर का परम पवित्र स्थान परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाता था। यह स्वर्ग में परमेश्वर के वास्तविक दरबार की झलक थी (देखें इब्रानियों 9:1-14)।

मिशनाह के अनुसार "स्वर्ग और पृथ्वी की" शपथ खाने वालों को छूट है। परन्तु यदि वे परमेश्वर के आगे विनती करते हैं (चाहे अदोनाय या याहवेह या सर्वशक्तिमान के नाम से) तो वे उस शपथ से बंध जाते हैं।[13] इसके उलट यीशु ने कहा कि जो **स्वर्ग की शपथ** खाता है वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठने वाले की भी शपथ खाता है। यशायाह 66:1 में परमेश्वर ने कहा, "आकाश मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे चरणों की चौंकी है।"

यीशु ने ऐसी सब शपथें खाने के विरुद्ध चेतावनी दी (5:33-37)। उसने दिखाया कि कोई भी शपथ खाने वाला उसे पूरा करने के लिए बाध्य है। हर शपथ चाहे वह बातों से हो, एक वचनबद्धता है, जिसका सबसे बड़ा गवाह परमेश्वर है और हमारी भाषा का अन्तिम न्याय वही करेगा (देखें 12:36, 37)।[14]

चौथी हाय (23:23, 24)

23"हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पोदीने, और सौंफ, और
जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय,
और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें
भी न छोड़ते। 24हे अन्धे अगुवो, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल
जाते हो।"

आयत 23. चौथी **हाय** में दसवां अंश दिए जाने की बात है। **दसवां अंश** देने का अर्थ दसवां भाग देना है। बाइबल में दसवां अंश देने का पहला उल्लेख अब्राहम के मलिकिसिदक को जो याजक/शालेम का राजा, यरूशलेम का प्राचीन नाम था, दसवां अंश देने की घटना है (उत्पत्ति 14:18-20)। व्यवस्था में दसवां अंश देने की शर्तें जटिल हैं; कुछ लोगों का मानना है कि तीन अलग अलग प्रकार के दसवां अंश होते थे। परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने लिए पवित्र रखने के लिए भूमि के बीज और फल का दसवां भाग और झुंड और जानवरों का दसवां भाग अलग रखने की आज्ञा दी थी (लैव्यव्यवस्था 27:30-33)। ऐसा करने से भूमि के स्वामी और सम्पत्ति के बांटने वाले के रूप में परमेश्वर को पहचान मिली (देखें लैव्यव्यवस्था 25:23; व्यवस्थाविवरण 8:17, 18)। दसवां अंश लेवियों को तम्बू और बाद में मन्दिर में उनकी सेवा के लिए दिया जाना था (गिनती 18:21-24)।[15] अन्य आयतों से संकेत मिलता है कि दसवां अंश उस स्थान में जहां परमेश्वर ने अपने नाम को रखना था, आराधना करने वालों और लेवियों के बीच बांटा जाना था (व्यवस्थाविवरण 12:5-19; 14:22, 23)। यदि कोई इस्राएली इतनी दूर रहता हो, जिसे इन चीज़ों को उठाकर लाना पड़ता तो वह इन्हें बेचकर, उससे मिले पैसे यरूशलेम में लाकर वहां से आवश्यक वस्तुएं खरीद सकता था (व्यवस्थाविवरण 14:24-27)। हर तीसरे वर्ष एक दसवां अंश अपने नगर में जमा करवाना होता था। इसका इस्तेमाल वहां पर रहने वाले लेवियों, अनाथों, विधवाओं और परदेसियों की सहायता के लिए किया जाता था (व्यवस्थाविवरण 14:28, 29; 26:12)।

पोदीने, सौंफ और **ज़ीरे** का इस्तेमाल मसालों के लिए किया जाता था। यशायाह के अनुसार किसान "सौंफ छितराता और ज़ीरे को बिखेरता है" (यशायाह 28:25)। ये मसाले दसवां अंश के नियमों के अधीन आते थे, जिसमें जो बोया गया था, उससे "भूमि की उपज" का दसवां अंश आवश्यक होता था (लैव्यव्यवस्था 27:30; व्यवस्थाविवरण 14:22)।[16] फरीसी लोग छोटी-छोटी पत्तियां और छोटे-छोटे बीजों को गिनने में बड़े सतर्क होते थे। यीशु के एक दृष्टांत में फरीसी ने शेखी मारी, "मैं अपनी *सब* कमाई का दसवां अंश भी देता हूं" (लूका 18:12)। एक और जगह यीशु ने कहा कि वे "पोदीने और सुदाब का और सब भांति के साग-पात का दसवां अंश देते" थे (लूका 11:42)।[17] छोटी-छोटी बातों की ओर ध्यान देने से लगता था कि वे बड़े धर्मी हैं।

फरीसी लोग इन छोटी-छोटी बातों में चाहे बड़े विश्वासयोग्य थे पर उन्होंने **व्यवस्था की गम्भीर बातों को छोड़ दिया** था। यहां पर "गम्भीर बातें" (*barus*) कठिनाई के बजाय महत्व

का संकेत देता है।[18] ऐसी भाषा से यहूदी लोग परिचित थे क्योंकि रब्बियों ने व्यवस्था को हल्की और भारी श्रेणियों में बांट दिया था (5:19 पर टिप्पणियां देखें)।[19] गम्भीर या भारी उपायों में **न्याय** (यशायाह 1:17; यिर्मयाह 22:3; मीका 6:8), **दया** (होशे 6:6; जकर्याह 7:9, 10), और **विश्वास** (हबक्कूक 2:4) थे। एक और अवसर पर यीशु ने कहा कि उन्होंने "न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को" टाल दिया था (लूका 11:42)। उसने ज़ोर दिया कि उन्हें **इन्हें भी करते** रहना चाहिए था और **उन्हें भी न छोड़ना** चाहिए था, जो अधिक महत्वपूर्ण थे।

आयत 24. फिर यीशु ने फरीसियों को **हे अंधे अगुओ** बताया (देखें 23:16)। उसने यह कहते हुए कि ये लोग **मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हैं**। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने और बड़ी और महत्वपूर्ण बातों को नज़रअन्दाज़ कर देने को दिखाया। प्रभु को ऐसे गम्भीर अन्तरों का इस्तेमाल पसन्द था (7:3, 4; 13:31, 32; 17:20; 19:24)। मच्छर की तुलना, जो एक छोटा-सा कीड़ा है, ऊंट से की गई, जो फलस्तीन में सबसे बड़ा जानवर था। हो सकता है कि उसके रूपक में जो लोकोक्ति हो,[20] अरामी भाषा के शब्दों का खेल हो। "मच्छर" के लिए शब्द (*qalma'*) या (*qamla'*) है जबकि "ऊंट" के लिए (*gamla'*) शब्द है।[21] मच्छर और ऊंट दोनों ही औपचारिक रूप में अशुद्ध थे और भोजन के रूप में उनके खाने की मनाही थी (लैव्यव्यवस्था 11:4, 20-23, 41-43)। फरीसी लोग अपने दाखरस से अशुद्ध कीड़े-मकौड़ों को निकालने के लिए कपड़े और लकड़ी की टोकरियों का इस्तेमाल करते थे।[22] यीशु की अतिश्योक्ति की बात इस बात का संकेत है कि वे छोटी-छोटी अशुद्धता से बचने का तो प्रयास करते थे पर बड़ी अशुद्धता से मेल कर लेते थे।

पांचवीं हाय (23:25, 26)

25"हे कपटी शास्त्रियो, और फरीसियो, तुम पर हाय! कटोरे और थाली को ऊपर
ऊपर से तो मांजते हो, परन्तु वे भीतर अन्धेर और असंयम से भरे हुए हैं। 26हे अन्धे फरीसी,
पहिले कटोरे और थाली को भीतर से मांज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों।"

आयत 25. पांचवीं **हाय** में यीशु ने यहूदी अगुओं की आलोचना की, क्योंकि वे **कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो मांजते** थे पर अन्दर को अनदेखा कर देते थे। यहूदी लोग अपनी और खाने के अपने बर्तनों की औपचारिक सफ़ाई पर ध्यान देते थे (15:1-20; मरकुस 7:1-8)। उन्होंने कटोरे के अन्दर और इसके बाहर की सफ़ाई में अन्तर बना लिया था।[23] यीशु ने इन **शास्त्रियों और फरीसियों** के मनों की स्थिति को समझाने के लिए इसकी पृष्ठभूमि का इस्तेमाल किया। उसके स्पष्ट आरोप कि **"वे भीतर अंधेर और असंयम से भरे हुए हैं"** से इसका पता चलता है। "अंधेर और असंयम से" कटोरा या डिश नहीं भर सकते, पर लोग भर सकते हैं (15:18, 19)। इन अगुओं को अपनी भीतरी आत्मिक स्थिति के बजाय बाहरी रूप से औपचारिक अशुद्धता की अधिक चिन्ता थी। फरीसी तो अपने औपचारिक नहाने के प्रति और भी सचेत थे परन्तु वे लालची और लोभी थे (लूका 16:14)। "असंयम" के लिए यूनानी शब्द (*akrasia*) का सम्बन्ध शारीरिक अनैतिकता से हो सकता है (1 कुरिन्थियों 7:5)। परन्तु कटोरे के रूपक से जुड़े होने के कारण इसमें उनके अत्यधिक दाखरस और बीयर लेने का सुझाव

हो सकता है।

आयत 26. यीशु ने उनके पापों और ज़्यादतियों का उपचार बताया: **''हे अन्धे फरीसी, पहिले कटोरे और थाली को भीतर से मांज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों।''** लूका में उसने कहा, ''भीतर वाली वस्तुओं को दान कर दो, तो देखो सब कुछ तुम्हारे लिए शुद्ध हो जाएगा'' (लूका 11:41)।

छठी हाय (23:27, 28)

[27]''हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो, जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। [28]इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।''

आयत 27. छठी **हाय** में बाहरी दिखावे से अंदरूनी वास्तविकता में अन्तर करना जारी रहता है। **शास्त्रियों और फरीसियों को चूना फिरी हुई कब्रों** के समान बताया गया है, **जो ऊपर से सुन्दर दिखाई देती हैं**। यरूशलेम के थोड़ा आगे, जैतून पहाड़ का निचला भाग कब्रिस्तान है, जिसमें कुछ प्राचीन कब्रें पाई जाती हैं। नये नियम के समयों में ऐसी कब्रों की अदार (फरवरी/मार्च) की 15 तारीख के आसपास चूने से लिपाई की जाती थी।[24] ऐसा साल बाद किया जाता था क्योंकि बरसात के मौसम में चूना धुल जाता था (देखें यहेजकेल 13:10-12)। कब्रों की पुताई से फसह और पिन्तेकुस्त के पर्वों पर यरूशलेम आने वाले यात्रियों के लिए नगर और आकर्षक लगता था।[25] इसके अलावा यह यात्रियों को अनजाने में किसी कब्र को छूने से रोक देता था (लूका 11:44)। ऐसे सम्पर्क से वे औपचारिक रूप में सात दिनों तक अशुद्ध हो जाते होंगे (गिनती 19:16) जिससे पर्व की गतिविधियों में भाग लेने के अयोग्य हो जाते (देखें यूहन्ना 11:55; 18:28)। ये कब्रें चाहें जितनी सुन्दर थीं पर यीशु ने संकेत दिया कि **भीतर** [से वे] **मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हुई** थीं।

आयत 28. यीशु ने इस रूपक को शास्त्रियों और फरीसियों पर लागू किया: **''इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।''** वे अपने तावीज चौड़े करते और अपनी झालरें लम्बी करते थे (23:5), जिससे ''मनुष्यों को धर्मी'' लगें; पर उनके मन अन्दर से सड़े हुए थे। विलियम हैंड्रिक्सन का मानना था कि यहां ''अधर्म'' का अर्थ ''बिना व्यवस्था के होने की स्थिति नहीं, बल्कि परमेश्वर की व्यवस्था को तुच्छ मानने की है।''[26]

टालमुड में रब्बान गमलीएल के यह कहते हुए कि ''कोई चेला जिसका चरित्र उसके लिबास से मेल न खाए बेथ-हा-मिदरश में नहीं जा सकता'' एक आदेश जारी करने की कहानी है। बाद में सभी छात्रों को पाठशाला में ले लिया गया और सैकड़ों सीटें और बढ़ा दी गईं। गमलीएल यह सोचते हुए कि उसने व्यवस्था के कई योग्य जवानों को वंचित कर दिया है, चौकस हो गया। परन्तु एक स्वप्न में यह देखकर कि राख के भरे सफेद पीपे जो इस बात का संकेत थे कि जिन्होंने क्लास में भाग नहीं लिया वास्तव में वे खरे नहीं थे, वह आश्वस्त हो गया।[27]

सातवीं हाय (23:29-33)

[29]''हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम भविष्यवक्ताओं की कब्रें
संवारते और धर्मियों की कब्रें बनाते हो, [30]और कहते हो, 'यदि हम अपने बाप-दादों के
दिनों में होते तो भविष्यवक्ताओं की हत्या में उन के साझी न होते।' [31]इससे तो तुम अपने
पर आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यवक्ताओं के हत्यारों की सन्तान हो। [32]अतः तुम
अपने बाप-दादों के पाप का घड़ा भर दो। [33]हे सांपो, हे करैतों के बच्चो, तुम नरक के
दण्ड से कैसे बचोगे?''

आयत 29. कब्र का रूपक सातवीं हाय में जारी रहता है। तुम पर हाय! तुम भविष्यवक्ताओं की कब्रें संवारते और धर्मियों की कब्रें बनाते हो, को कुछ लोगों द्वारा एक ही बात कहने के दो ढंगों के रूप में देखा जाता है कि ''कब्रें'' का अर्थ तो कब्रें ही है परन्तु ''भविष्यवक्ताओं'' और ''धर्मियों'' का अर्थ एक ही है। अन्य का विचार है कि समानांतरता में शब्दों के अर्थों में थोड़ा बहुत अन्तर है। यह तय कर पाना कठिन है, क्योंकि यूनानी शब्द *mnēmeion* का अर्थ ''यादगार, स्मारक'' या ''कब्र, समाधि'' दोनों हो सकता है।[28] इसके अलावा ''भविष्यवक्ता'' लोग सचमुच में ''धर्मी'' होते थे, पर यह भी हो सकता है कि ''धर्मी'' वफ़ादारी से परमेश्वर की सेवा करने वालों को कहा गया, हो जिन्हें भविष्यवक्ताओं की तरह परमेश्वर की प्रेरणा नहीं होती (10:41 पर टिप्पणियां देखें)।

डब्ल्यू. एफ. अल्ब्राइट और सी. एस. मन के अनुसार, ''भक्त लोगों की कब्रों को सजावटी स्मारकों के साथ संवारने की प्रथा की तरह यीशु के समय में भविष्यवक्ताओं की कब्रों पर उन्हें सम्मान देकर उनका आदर करने की प्रथा निश्चित तौर पर आम थी।''[29] अपोक्रिफा यानी अप्रामाणिक पुस्तकों में दोनों नियमों के बीच के काल की एक प्रथा इसकी गवाही देती है। साइमन मक्काबी ने अपने परिवार के लोगों को सम्मान दिया, जिन्होंने स्वतन्त्रता पाने में यहूदियों की अगुआई की थी:

> [उसने] अपने पिता और अपने भाइयों की कब्र पर [मोदेन में] एक स्मारक बनवाया; आगे और पीछे चिकने पत्थर से उसने इसे ऊंचा बनाया जिससे यह दिखाई दे सके। उसने अपने पिता और माता और चार भाइयों के लिए एक-दूसरे के सामने सात पिरामिड भी बनवाए। पिरामिडों के लिए उनके पास बड़े स्तम्भ बनवाकर और स्तम्भों के ऊपर पक्की यादगार के लिए कवच बनवाए, और कवचों के पास उसने समुद्री जहाज़ बनवाए ताकि उन्हें समुद्र में जाने वाले देख सकें।[30]

स्मारक बनवाने का एक और उदाहरण जोसेफस में मिलता है, जिसने हेरोदेस महान की कहानी के साथ इसे जोड़ा। हेरोदेस ने दाऊद की कब्र का सोने का फर्नीचर लूट लिया था। दूसरे प्रयास पर जब हेरोदेस और उसके आदमी कब्र के और अन्दर गए तथा दाऊद और सुलैमान के पजरों तक पहुंच गए तो उसके दो सिपाही आग की लपट से मर गए, जिससे हेरोदेस बहुत ही भयभीत हो गया और ''कब्र के आगे सफेद पत्थर का एक प्रायश्चितकर्त्ता स्मारक बनवाया और वह भी बहुत खर्च करके।''[31]

प्राचीन काल की कब्रों के कई स्मारक आज भी यरूशलेम में पाए जाते हैं। तीन तो किद्रोन की तराई में हैं: अबशालोम की कब्र, जकर्याह की कब्र और बेन हेज़ीर की कब्र। परन्तु उनके निर्माण की तिथियां विवाद का विषय हैं। माना यह जाता है कि पहली दो समाधियों पर गलत नाम दिया गया है; इस पर संदेह है कि इन जगहों में या तो दाऊद के पुत्र अबशालोम को या जकर्याह नबी को दफ़नाया गया था।

आयत 30. शास्त्री और फरीसी नबियों की कब्रें संवारते थे। स्पष्टतया वे इस बात का दावा भी करते थे कि यदि वे अपने बाप-दादों के दिनों में होते, जब से **भविष्यवक्ताओं की हत्या** कर रहे थे तो वे इन अत्याचारों में **उनके साझी न होते** (21:35, 36 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 31. यीशु ने बताया कि यह कहकर कि उनके बाप दादा नबियों के हत्यारे हैं, वे अपना ही दोष स्वीकार कर रहे थे: "**इससे तो तुम अपने पर आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यवक्ताओं के हत्यारों की सन्तान हो।**" उनकी रगों में अपने हत्यारे बाप-दादाओं का खून ही दौड़ रहा था और उस सप्ताह के अन्त में होने वाली घटनाओं ने यह साबित कर देना था कि वे अपने बाप-दादाओं की "असली सन्तान" हैं। न केवल वे उन हत्यारों के शारीरिक रूप में सन्तान थे बल्कि उनमें वही आत्मिक सोच थी।

शास्त्रियों और फरीसियों का कपट स्पष्ट था। ऊपर से तो वे नबियों की कब्रों को सजाकर उनके प्रति श्रद्धा दिखा रहे थे, पर नबियों की परम्परा में बने रहने वालों अर्थात यीशु और उसके चेलों का घोर विरोध कर रहे थे (21:37-39; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14-16)।[32] स्तिफनुस ने महासभा का सामना करते हुए यही बात उठाई थी: "भविष्यवक्ताओं में से किस को तुम्हारे बाप-दादों ने नहीं सताया, और उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देने वालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वाने वाले और मार डालने वाले हुए" (प्रेरितों 7:52)।

आयत 32. यीशु ने कहा, **अतः तुम अपने बाप-दादों के पाप का घड़ा भर दो।** यह यीशु द्वारा बाद में यहूदा से कही गई बात का कि "जो तू करता है तुरन्त कर" (यूहन्ना 13:27)। कहने का एक और ढंग था। TEV में है, "तो फिर आगे बढ़ो और उसे पूरा करो, जो तेरे पूर्वजों ने आरम्भ किया था!" अलैग्ज़ैंडर बलमेन ब्रूस ने इस विचार को और आगे बढ़ा दिया: "अपने बाप-दादाओं का बर्तन भर दो; परमेश्वर की ओर से *तुम्हारे* पास भेजे गए नबियों को कत्ल करके उनके दुष्कर्मों की शान बढ़ाओ। अन्त में उसे कर ही डालो जो बड़े लम्बे समय से तुम्हारे मनों में है। वह घड़ी आ चुकी।"[33] यीशु के कहने का अर्थ यही था कि "सब चेतावनियों पर तुम ने अपने मनों को कठोर कर लिया है, इसलिए अब जिम्मेदारी पूरी तरह से तुम्हारी है।"[34] कई अवसरों पर यहूदियों ने यीशु को पहले भी मार डालने के षड्यन्त्र रचे थे (12:14; 21:46; मरकुस 11:18; लूका 19:47; यूहन्ना 5:18; 7:1, 19, 25; 8:37, 40; 11:53)।

आयत 33. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यरदन नदी के तट पर उससे बपतिस्मा लेने के लिए आने वालों से पूछा था, "हे सांप के बच्चो, तुम्हें किसने जता दिया कि आने वाले क्रोध से भागो?" (3:7)। यीशु ने भी फरीसियों को **कैरतों के बच्चो** कहकर इसी रूपक का इस्तेमाल किया (12:34 पर टिप्पणियां देखें)। चेतावनी की उनकी बातों को नकार दिया गया था और अब यीशु ने पूछा, "**तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे?**" उसके अलंकारिक प्रश्न का अर्थ था कि यदि वे अपनी दुष्ट योजना पर काम करते हैं तो वे नरक के दोष या "दण्ड" से बच नहीं पाएंगे।

अतिरिक्त विचार

सातवीं हाय के सम्बन्ध में (23:34-36)

34"इसलिए देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यवक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूं; और तुम उन में से कुछ को मार डालोगे, और क्रूस पर चढ़ाओगे, और कुछ को अपने आराधनालयों में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे। 35जिस से धर्मी हाबील से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकर्याह तक, जिसे तुमने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लोहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा। 36मैं तुम से सच कहता हूं, ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी।"

आयत 34. जिस प्रकार से उनके बापदादों ने नबियों की हत्या की थी, वैसे ही शास्त्रियों और फरीसियों ने यीशु के चेलों की हत्या करनी थी। प्रभु ने कहा कि उसने उनके पास **भविष्यवक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों,** परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लोगों और अन्य सिखाने वालों को भेजना था, जिन्होंने सुसमाचार बताना था। परन्तु यहूदी अगुओं ने उन्हें भी नकार देना था: **और तुम उन में से कुछ को मार डालोगे, और क्रूस पर चढ़ाओगे, और कुछ को अपने आराधनालयों में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे।** "क्रूस पर चढ़ाओगे" से यीशु का अभिप्राय था कि यहूदियों ने "उन्हें क्रूस पर चढ़वाना" था। उन्होंने उसके चेलों को रोमियों को सौंप देना था, जिन्होंने आगे उन्हें क्रूस पर चढ़ाकर मार डालना था (देखें प्रेरितों 2:36; 4:10)। यहां पर की गई भविष्यवाणी अपने चेलों को दी गई यीशु की पहली चेतावनियों से मेल खाती है (5:11, 12; 10:17, 23 पर टिप्पणियां देखें)।

अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते हुए यीशु ने प्रेरितों, भविष्यवक्ताओं और अन्य सिखाने वालों को यहूदियों के बीच में भेजा। उसकी भविष्यवाणी के अनुसार उन्हें उसी पीढ़ी में बढ़ी बुरी तरह से सताया जाना था (23:36)। प्रेरितों को यहूदी अगुओं द्वारा बन्दी बनाया गया परन्तु परमेश्वर की ओर से भेजे एक स्वर्गदूत द्वारा उन्हें आश्चर्यकर्म के द्वारा छुड़ा लिया गया (प्रेरितों 5:17-21)। जब उन्हें दोबारा गिरफ्तार किया गया और महासभा के सामने पेश किया गया तो उन्हें "कोड़े मारे गए" और "चेतावनी दी गई कि यीशु के नाम से उपदेश न करना" (प्रेरितों 5:27, 28, 40)। महासभा के आदेश से पथराव होने के कारण स्तिफनुस पहला मसीही शहीद बना (प्रेरितों 6:12; 7:1, 57, 58)।[35] उस समय कलीसिया पर बड़ा सताव हुआ (प्रेरितों 8:1)। शाऊल घर जाकर मसीही लोगों को गिरफ्तार करते हुए कलीसिया को सता रहा था (प्रेरितों 8:3)। जब भी उन्हें मार डालना होता तो वह "उनके विरोध में अपनी सम्पत्ति देता था" (प्रेरितों 26:10)। उसका पागलपन उसे मसीही लोगों को बन्दी बनाने के लिए दूर-दूर के नगरों में ले गया (प्रेरितों 9:1, 2; 26:11)।

यूहन्ना के भाई याकूब को बाद में हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम द्वारा उसका सिर काटे जाने पर वह शहीद होने वाला पहला प्रेरित बन गया (प्रेरितों 12:1, 2)। इस हेरोदेस ने पतरस का भी यही हाल करने के लिए उसे बन्दीगृह में डाल दिया; परन्तु परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया, जिस कारण

पतरस छूट गया (प्रेरितों 12:3–12)। पौलुस और उसके साथी जहां भी मिशनरी यात्राओं पर जाते यहूदी अगुओं द्वारा उन्हें प्रताड़ित किया जाता और सताया जाता। आमतौर पर उन्हें अपनी ही जान बचाने के लिए अगले नगर में भाग जाना पड़ता।[36]

आयत 35. अपने चेलों को उनके सताने के कारण यीशु ने कहा कि **जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है,** वह शास्त्रियों और फरीसियों पर पड़ना था। परमेश्वर के मासूम सेवकों की हत्या करने का दोष सदियों से उलझा हुआ था और परमेश्वर द्वारा इस्राएल पर लाए जाने वाले न्याय में शीघ्र ही यह चरम पर पहुंच जाना था।

''जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है'' को आगे दो जनों की हत्याओं से और परिभाषित किया गया है। मारा जाने वाला पहला **धर्मी** व्यक्ति **हाबील** था, जिसकी हत्या उसके भाई कैन ने की थी (उत्पत्ति 4:8)। यूहन्ना ने लिखा है कि कैन ने अपने भाई की हत्या इसलिए की ''क्योंकि उसके काम बुरे थे और उसके भाई के काम धर्म के थे'' (1 यूहन्ना 3:12)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है, ''विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिए चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई: क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है'' (इब्रानियों 11:4)। अपनी मासूमियत के कारण हाबिल का **लहू** न्याय के लिए ज़मीन से पुकारता था (उत्पत्ति 4:10; इब्रानियों 12:24)।

दूसरा आदमी **जकर्याह** बताया गया है, जिसे पहचानना कठिन है। उसे **बिरिक्याह का पुत्र** बताया गया है, जिसे **मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला** गया था। गैरी एम. बर्ग के अनुसार ''जकर्याह'' नाम के तीस से अधिक लोगों का उल्लेख बाइबल में है।[37] मन्दिर के क्षेत्र में मारे गए केवल एक आदमी के बारे में बताया गया है। जिसे मूर्ति पूजा के विरुद्ध अपने मजबूत पक्ष के कारण राजा योआब के आदेश से उसे पथराव किया गया था। उसकी मृत्यु ''यहोवा के भवन के आंगन में'' हुई थी (2 इतिहास 24:20, 21)। यह विवरण यीशु की बात से मेल खाता तो है पर उस जकर्याह को ''यहोयादा याजक के पुत्र जकर्याह'' के रूप में जाना जाता था न कि ''बिरिक्याह के पुत्र जकर्याह'' के रूप में।

टीकाकारों द्वारा इस कठिनाई को कई प्रकार से सुलझाया गया है। (1) कइयों का मानना है कि याशु किसी जकर्याह की बात कर रहा था, जिसकी हत्या पहली सदी में यहूदियों ने की थी। वे दूसरे व्यक्तिगत सर्वनाम **तुम** पर ज़ोर देते हैं: ''जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला था।'' यहां पर विचाराधीन समय अवधि सृष्टि से लेकर पहली सदी तक की है। क्योंकि यीशु के सुनने वालों के लिए समय वहीं तक था। जोसेफ़स ने लिखा है कि मन्दिर में ''बरूक के पुत्र जकर्याह'' की हत्या की गई थी, परन्तु यह काम यरूशलेम के विनाश के निकट जेलोतेसों द्वारा किया गया था।[38] यह घटना इस आयत में कहे गए यीशु के शब्दों के लगभग चालीस साल *बाद* हुई।

(2) अन्यों का मानना है कि यीशु उस जकर्याह की बात कर रहा था, जिसने उसके नाम से प्रसिद्ध पुराने नियम की छोटे नबियों की किताब लिखी थी। जकर्याह 1:1 में उसने अपने आपको जकर्याह भविष्यवक्ता जो ''बिरिक्याह का पुत्र'' था बताया है। यह नाम यीशु के द्वारा दिए गए नाम से मेल खाता है। यदि यह पहचान सही है तो इसकी समय अवधि सृष्टि से लेकर

पुराने नियम के काल के अन्त तक की होगी, क्योंकि जकर्याह अन्तिम नबियों में से एक था। उसका काम निर्वासन के काल के बाद पांचवीं शताब्दी ई.पू. तक था। बड़ी समस्या यह है कि पवित्र शास्त्र यह नहीं बताता कि उसकी मृत्यु कैसे हुई थी। क्या इस नबी को जिसने मन्दिर के पुनर्निमाण के लिए प्रोत्साहित किया था, वास्तव में वहां पर मार डाला गया था?

(3) कुछ विद्वानों का मत है कि यहोयादा के पुत्र जर्कयाह का ही उल्लेख आयत 35 में है। कठिन पदनाम ''बिरिक्याह के पुत्र'' की व्याख्या के कई सुझाव दिए गए हैं। बाइबल में लोगों के नाम आम तौर पर एक से अधिक होते थे। इस कारण बिरिक्याह का एक वैकल्पिक नाम यहोयादा भी हो सकता है। एक और सम्भावना है कि बिरिक्याह जकर्याह और यहोयादा का पुत्र था। यहां पर ''पुत्र'' शब्द का इस्तेमाल ''संतान'' के अर्थ में किया गया है।[39] सम्भवतया ''बिरिक्याह का पुत्र'' शब्दों को बाद में किसी शास्त्री द्वारा जोड़ दिया गया जिसने दोनों जकर्याहों को उलझा दिया। इस सुझाव के लिए धर्मशास्त्र का प्रमाण सीमित है, जिस कारण यह महत्वपूर्ण है कि लूका में समानांतर आयत में ''बिरिक्याह का पुत्र'' वाक्यांश नहीं है (लूका 11:51)

यदि यहोयादा का पुत्र जकर्याह सही है तो यीशु यही कह रहा था कि पूरे पुराने नियम के सब धर्मियों के लहू का दोष शास्त्रियों और फरीसियों के ऊपर पड़ेगा। इब्रानी बाइबल में, पहली पुस्तक उत्पत्ति (जहां हाबिल की हत्या का वर्णन है) और अन्तिम पुस्तक 2 इतिहास है (जिसमें जकर्याह की हत्या का वर्णन है)। यह विवरण किसी मसीही के ''उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक'' कहने की तरह ही होगा।

इतनी हत्याओं के दोनों विवरणों में बदला लेने का विषय पाया जाता है। जैसा कि पहले देखा गया, हाबिल का लहू न्याय के लिए भूमि में से पुकारता था (उत्पत्ति 4:10)। जब जकर्याह को मारने के लिए उस पर पथराव किया जा रहा था तो वह पुकार उठा, ''यहोवा इस पर दृष्टि करके इसका लेखा ले!'' (2 इतिहास 24:22)। आर. टी. फ्रांस ने कहा है कि ''इन दोनों उदाहरणों की पसंद लहू के दोष के चरम के यीशु के विषय से साथ दोगुना उपयुक्त है।''[40]

आयत 36. यीशु ने भविष्यवाणी की कि इन अन्यायों का दण्ड **सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा** (11:16; 12:39, 40; 17:17 पर टिप्पणियां देखें)। चालीस साल के अन्दर-अन्दर विसपेसियन और उसके पुत्र टाइटस की सेनाओं ने यरूशलेम को घेर लिया और अन्त में 70 ई. में नगर को नष्ट कर दिया।

यरूशलेम पर उसका विलाप (23:37-39)

37''हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू भविष्यवक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे
पास भेजे गए, उन पर पथराव करता है कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों
को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूं, परन्तु
तुम ने न चाहा। 38देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है। 39क्योंकि मैं तुम से
कहता हूं कि अब से जब तक तुम न कहोगे, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है' तब
तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।''

आयत 37. यीशु **''हे यरूशलेम, हे यरूशलेम ... !''** कहते हुए विलाप करने लगा।

किसी शब्द या नाम को दोहराना आमतौर पर गहरे लगाव का संकेत देता है (2 शमूएल 18:33; 1 राजाओं 13:2; लूका 10:41; 22:31)। किसी भी अन्य यहूदी की तरह यीशु को पवित्र नगर से गहरा लगाव था। ऐसा लगता है कि यहां पर "यरूशलेम" का इस्तेमाल उसने पूरी इस्राएल जाति के प्रतीक के लिए किया।

प्रभु ने आगे कहा, "... **तू भविष्यवक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन पर पथराव करता है**।" चाहे सभी नबियों और परमेश्वर की ओर से भेजे गए और दूतों को यरूशलेम में मारा नहीं गया था पर इनमें से अधिकतर अपराध वहीं से आरम्भ हुए थे। या तो उनका आरम्भ महासभा की ओर से या जैसा कि यहोयादा के पुत्र जकर्याह के मामले में हुआ, सिंहासन की ओर से है। अनुवाद हुए शब्द "मार डालता" और "पथराव करता" शब्द यूनानी धर्मशास्त्र में वर्तमान क्रियाशील कृदंत हैं, जिनका अनुवाद "जो मार रहे हो" और "जो पथराव कर रहे हो" हो सकता है। अन्य शब्दों में उनमें निरन्तर काम करने का संकेत है। पथराव किया जाना जादूगरों (लैव्यव्यवस्था 20:27), परमेश्वर की निंदा करने वालों (लैव्यव्यवस्था 24:16), झूठे भविष्यवक्ताओं (व्यवस्थाविवरण 13:1-11) और मूर्तिपूजकों (व्यवस्थाविवरण 17:2-7) के लिए दण्ड था। यह विडम्बना और त्रासदी दोनों ही है कि परमेश्वर की ओर से भेजे गए विश्वासयोग्य लोगों के साथ ऐसा व्यवहार किया गया।

कितनी ही बार शब्द इस बात का संकेत देते हैं कि यीशु कई बार यरूशलेम गया था। एक बालक के रूप में अपने माता पिता के साथ यीशु के यरूशलेम में जाने (लूका 2:22-38) और बारह वर्ष की उम्र में (लूका 2:41-51) जाने को छोड़ सहदर्शी वृत्तांतों के लेखक इससे पहले यीशु के यरूशलेम में आने का कोई उल्लेख नहीं करते। परन्तु यूहन्ना के विवरण से हम जानते हैं कि यीशु लगभग 3½ वर्ष की अपनी निजी सेवकाई के दौरान कई बार वहां गया (यूहन्ना 2:13; 5:1; 7:14; 10:22, 23; 12:12)। कुरनेलियुस के घर अपने संदेश में पतरस की बात में कई बार जाने का संकेत है (प्रेरितों 10:39)। यीशु व्यवस्था को पूरी तरह से मानता था इस कारण हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि वह साल में उतनी बार यरूशलेम में जाता था जितनी बार नगर के पास रहने वाले हर यहूदी पुरुष के लिए जाना आवश्यक था।

यीशु इस अवसर पर रोया या नहीं (देखें लूका 19:41), पर उसकी बातों से उसके गहरे शोक और दुख का पता चलता है। उसने विलाप किया कि वह यहूदियों को अपनी रक्षात्मक भुजाओं में जमा कर लेता यदि वे उसके पास आने को तैयार होते, पर वे तैयार नहीं थे। यीशु ने अपनी तुलना एक **मुर्गी** से की जो **अपने बच्चों को** परभक्षियों से और खराब मौसम से उन्हें **अपने पंखों के नीचे** इकट्ठे करके और सुरक्षा देकर सम्भालती है। ऐसे ही रूपक पुराने नियम में मिलते हैं, जिससे परमेश्वर के इस्राएल की रक्षा और छुटकारे का पता चलता है। (व्यवस्थाविवरण 32:11; रूत 2:12; भजन संहिता 17:8; 36:7; 57:1; 61:4; 63:7; 91:4; यशायाह 31:5)।

धर्मशास्त्र की सबसे दुखद भाग तुम ने न चाहा वाली बात है। ठुकराए जाने का विषय, परमेश्वर के लोगों की हठी इच्छा को दर्शाते हुए पिछले दृष्टांतों से लिया गया है। यहूदी अगुओं ने परमेश्वर के दूतों की नहीं सुननी थी और उन्होंने उसके पुत्र को ठुकराया (21:34-39)। उन्होंने उसके बार-बार दिए जाने वाले निमन्त्रण की ओर ध्यान नहीं दिया (22:3-6)।

आयतें 38, 39. यीशु ने भविष्यवाणी की, **''देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है।''** यहूदियों ने प्रभु के प्रस्तावों को ठुकरा दिया था। इसलिए उसने उन पर मृत्यु के दण्ड की घोषणा कर दी। यहां भाषा पुराने नियम की कुछ आयतों को याद दिलाती है (यिर्मयाह 12:7; 22:5; 26:6, 9)। ''घर'' शब्द का अर्थ मन्दिर (1 राजाओं 9:7, 8; हाग्गै 1:4, 9; मत्ती 21:13) या यरूशलेम नगर भी हो सकता है। उजाड़ का विचार खण्डर और बर्बादी है। परमेश्वर ने अपने मन्दिर और अपने लोगों को त्याग देना था। 70 ई. में उसने मन्दिर के साथ-साथ यरूशलेम को नष्ट करने की रोमी सेना को अनुमति दे देनी थी जिससे नगर खण्डहर में तबदील हो जाना था। यीशु ने उसी जगह पतन की भविष्यवाणी कि जहां से वह शिक्षा दे रहा था और उन्हीं लोगों की बात, जिनसे वह बात कर रहा था। यह आयत अध्याय 24 में यरूशलेम के विनाश पर निजी संदेश का पूर्वानुमान है।

यीशु ने कहा कि तुम मुझे तब तक **न देखोगे** जब तक यह नहीं कहते, **''धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है!''** (देखें भजन संहिता 118:26)। यहां दोहराई गई आयत वही है, जिसका इस्तेमाल यहूदी यात्रियों ने उसकी महिमा के लिए पहले विजयी प्रवेश में किया था (21:9 पर टिप्पणियां देखें)। इस बात से उसकी सार्वजनिक सेवकाई खत्म हो गई और इसने उसकी द्वितीय आगमन की ओर ध्यान दिलाया जिसकी चर्चा अध्याय 24 और 25 में की गई है। तब उनके पास यीशु को जो वह है, मानने के अलावा ''जो प्रभु के नाम से आता है!'' और कोई विकल्प नहीं होगा।[41] पौलुस ने लिखा, ''सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें'' और ''परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकाकर कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है'' (फिलिप्पियों 2:10, 11)।

यीशु ने पृथ्वी पर वापस आने के बारे में कुछ नहीं कहा। बाद में उसने सभा को बताया कि उन्होंने उसे ''सर्वशक्तिमान के दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते'' देखना था (26:64)। पौलुस ने कहा कि धर्मी लोग ''बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। वह इस पृथ्वी पर दोबारा कभी कदम नहीं रखेगा। प्रकाशन देने वाले यूहन्ना ने लिखा है, ''देखो, वह बादलों के साथ आने वाला है; और हर एक आंख उसे देखेगी, वरन जिन्होंने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हां आमीन'' (प्रकाशितवाक्य 1:7)।

दसवां अंश देना (23:23)

पुरानी वाचा में दसवां अंश देना आवश्यक था परन्तु नई वाचा में इसका कोई स्थान नहीं है। नये नियम में दसवां अंश देने की बात केवल कुछ ही बार आई है। सुसमाचार की पुस्तकों में इसका हवाला शास्त्रियों और फरीसियों के कार्यों में ही मिलता है (23:23; लूका 11:42; 18:12)। इब्रानियों में, दसवां अंश की बात पुराने नियम के हवालों के सम्बन्ध में ही है। जहां अब्राहम ने शालेम के याजक मलकिसिदक को दसवां अंश दिया और बाद में इस्राएलियों ने लेवियों को दसवां अंश दिया (इब्रानियों 7:4-10)। दसवां अंश देने की प्रणाली के द्वारा याजकों को सहायता मिलती थी; इसकी तुलना कर से भी की जा सकती है।[42] मसीही लोगों को दसवां अंश देने की आज्ञा कहीं नहीं दी गई। इसके बजाय हमें अपनी आमदनी के अनुसार आनन्द से

अपनी कमाई में से देने को कहा गया है (2 कुरिन्थियों 9:7)।

टिप्पणियां

[1]जॉन मैकऑर्थर, जूनि., *द मैकआर्थर न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: मैथ्यू 16–23* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1988), 375. [2]ब्रूस एम. मैज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 50. [3]देखें टालमुड *गिट्टिन* 52एबी। [4]देखें *टैस्टामेंट ऑफ मोसेस* 7.6. [5]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 14.7.2. [6]वही, 20.2.3, 4., टेसिटुस *हिस्ट्रीज़* 5.5; होरेस *सेटायर्स* 1.4.142, 143. [7]इसी प्रकार यहूदा को "विनाश का पुत्र" कहा जाता था (यूहन्ना 17:12)। इसके अलावा टालमुड में "गेहिन्नोम के पुत्र" वाक्यांश मिलता है (टालमुड रोश हाशनाह 17ए)। एक विपरीत अभिव्यक्ति "राज्य की संतान" है (13:38)। [8]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1992), 578 में डेविड ई. गरलैंड, "ओथ्स एंड स्वीयरिंग।" [9]जोसेफस *वार्स* 5.5.6. [10]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 14.4.4; 14.7.1, 2; *अगेंस्ट अपियन* 2.7.

[11]एलन हुग मैक्नेल, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू सेंट मैथ्यू* (लंदन: मैक्मिलन एंड कं., 1938), 334. [12]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 669. [13]मिशनाह *शेबोथ* 4.13. [14]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 269. [15]बदले में लेवी लोग याजकों को दसवां अंश देते थे (गिनती 18:25–32)। [16]मिशनाह *मासेरोथ* 4.5. [17]मिशनाह के अनुसार, दसवां अंश सदा तक नहीं रहना था क्योंकि यह अनियन्त्रित हो गया था। (मिशनाह *शेबिथ* 9.1.) [18]इसी यूनानी शब्द का एक रूप इस अध्याय में पहले "भारी" बोझ के लिए इस्तेमाल किया गया (23:4)। [19]मिशनाह *अबोथ* 2.1; 4.2. [20]देखें टालमुड *शब्बथ* 12ए।

[21]हैग्नर, 670–71; आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 329. [22]मिशनाह *शब्बथ* 20.1, 2; टालमुड *हुलिन* 67ए। [23]मिशनाह *केलिम* 25.7, 8. कटोरे के एक भाग के साथ होने से दूसरे भाग के प्रभावित होने के ढंग पर रब्बियों के अपने-अपने विचार पाए जाते थे। (*टोहरोथ* 8.7; *पराह* 12.8.) अधिक जानकारी के लिए देखें जैकब न्यूस्नर, "फर्स्ट कलेंज़ द इनसाइड," *द न्यू टैस्टामैंट स्टडीज़* 22 (जुलाई 1976): 486–95. [24]मिशनाह *शेकालिम* 1.1; *मोयड कतन* 1.2; *मासेर शेनी* 5.1. एक वैकल्पिक व्याख्या "कब्रों" (*taphos*) का अर्थ "अस्थिगृह" बना देती है। देखें सेमुएल लैक्स "आन मैथ्यू 23:27–28," *हार्वर्ड थियोलॉजिकल रिव्यू* 68 (जुलाई–अक्तूबर 1975): 385–88. कुछ अस्थिगृहों को बड़ी खूबसूरती से सजाया जाता था, परन्तु इनमें मृत लोगों का मांस गल जाने के बाद हड्डियां ही बची होती थीं। [25]यह फसह का समय था जिस कारण कब्रों को चमकाने के लिए उन पर चूना फेरा गया था। कोई संदेह नहीं कि यीशु के सुनने वालों में से अधिकतर लोगों ने अभी-अभी उनमें से कुछ कब्रों को देखा था। [26]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 835. [27]टालमुड *बेराकोथ* 28ए। [28]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैड्रिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 654–55. *Mnēmeion* नये नियम के "कब्र" से बहुत मिलता है (8:28; 27:52, 53, 60; 28:8; मरकुस 5:2, 3; 6:29; 15:46; 16:2–8; लूका 11:44; 23:55; 24:2, 9, 12, 22, 24; यूहन्ना 5:28; 11:17, 31, 38; 12:17; 19:41, 42; 20:1–11; प्रेरितों 13:29)। [29]ए. एफ. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन, *मैथ्यू,* द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एंड कं., 1971), 281–82. [30]1 मक्काबियों 13:27–29 (NRSV)।

[31]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 16.7.1. दाऊद की कब्र का उल्लेख प्रेरितों 2:29 में है। [32]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 586. [33]*द एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामैंट,* अंक 1, *द सिनाप्टिक गॉस्पल्स-द गॉस्पल ऑफ़ सेंट जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1951), 285 में एलेक्ज़ेंडर बालमेन ब्रूस, "द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू।"

[34]हैंड्रिक्सन, 835. [35]मत्ती 23 में यीशु सम्भवतया कुछ लोगों के सुनते हुए बात कर रहा था, जो अभी भी उस सभा के सदस्य थे, जो स्तिफनुस पर पथराव किए जाने पर सभा के सदस्य थे। [36]प्रेरितों 13:45, 50; 14:2, 5, 6, 19; 17:5, 13; 18:12; 19:8, 9; 20:3; 21:27; 23:12; 24:1–9; 25:2, 3; 2 कुरिन्थियों 11:23–26. [37]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* 4:1182–83 में गैरी एम. बर्ग, ''जकर्याह।'' [38]जोसेफस *वार्स* 4.5.4. [39]छोटे नबी जकर्याह को ''बिरिक्याह का पुत्र, इद्दो का पोता'' (जकर्याह 1:1) और केवल ''इद्दो का पोता'' (एज्रा 6:14) कहा गया है। [40]फ्रांस, 331.

[41]हैग्नर, 681. [42]मैकॉर्थर, 384–85.